३ पुरुष अब्राहम को दिखाई दिए।

- इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह परमेश्वर का प्रकट होना था, क्योंकि यहाँ उसकी पहचान 'यहोवा' के रूप में की गई है।
- क्या यह यीशु हो सकते थे?
- पवित्रशास्त्र में कहीं भी यीशु को 'यहोवा' नहीं कहा गया है, जो पिता का नाम है।
- 'अदोनाय' एक बहुवचन शब्द है।
- 'एनोश' का अर्थ है – मनुष्य अथवा मानव जाति।

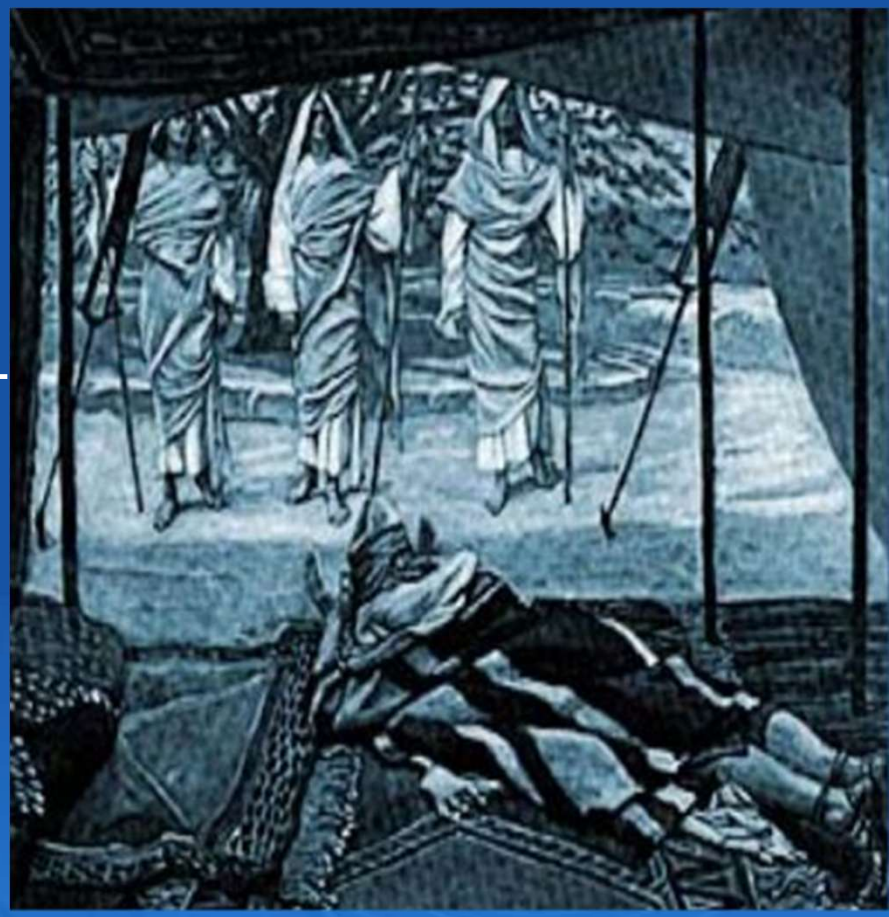

त्रित्व: वास्तविकता बनाम सिद्धान्त

"तीन व्यकियों" का सिद्धान्त

३-भागी परमेश्वरमूर्ति (गॉडहेड)

परमेश्वर के प्रकाशन

ये तीन
"पुरुष"
किसका
प्रतिनिधित्व
करते हैं
????????

भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्य में बहुत आगे तक देखा और जो उन्होंने देखा उसे कैसे वर्णन करें?

परमेश्वर का वर्णन करने के लिए कोई शब्द नहीं

“...तेरी पत्नी साराह कहाँ है?”

- **वाक्पटु प्रश्न**
- पद १०: साराह एक वर्ष के भीतर एक पुत्र को जन्म देगी!
- यहोवा की प्रतिज्ञाएँ क्रमशः एक-एक करके पूरी हो रही हैं।
- उत्पत्ति १२:२, उत्पत्ति १५:४, उत्पत्ति १७:१६-२१, **अब** उत्पत्ति १८:१०

वाचा पर बनी हुई हैं वाचाएँ

२री मंज़िल — येशुआ की वाचा

१ली मंज़िल — मूसा की वाचा

आधार (निव) — अब्राहम की वाचा

भूमि (ज़मीन) — नूह की वाचा

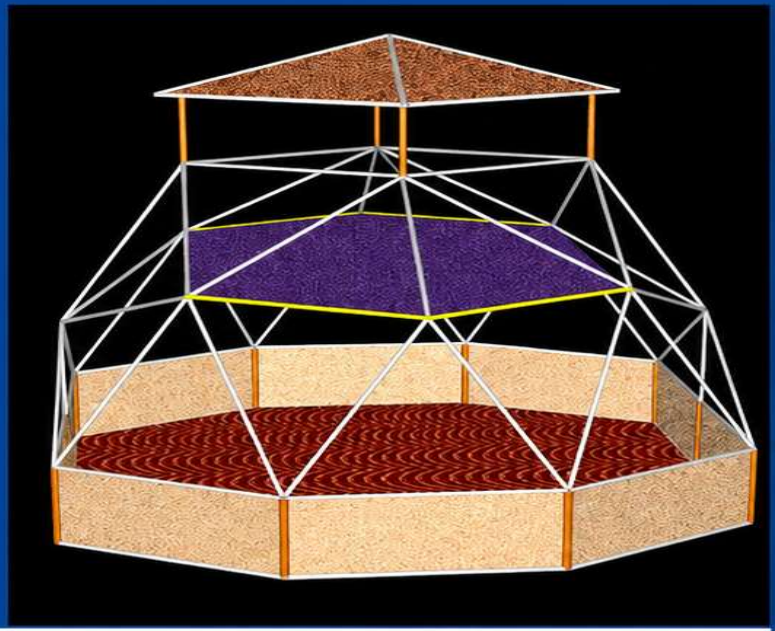

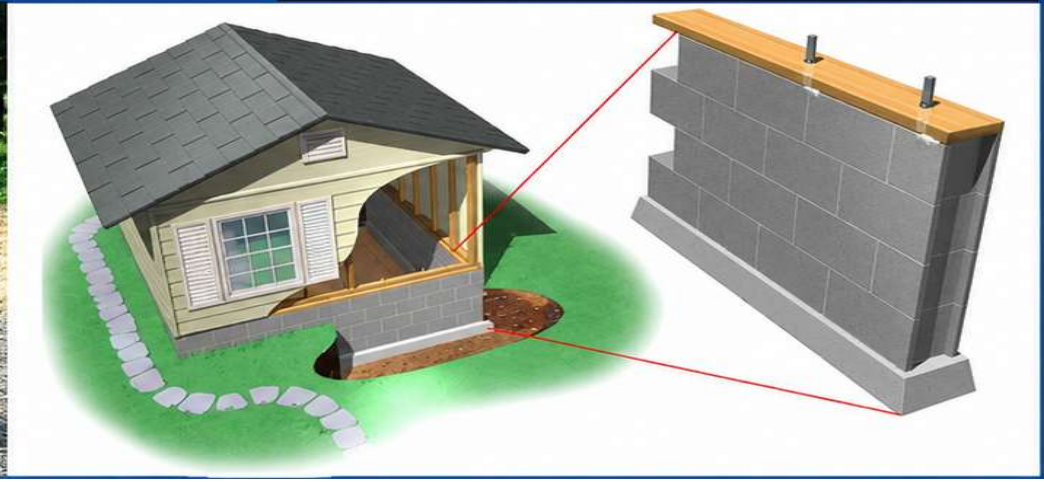

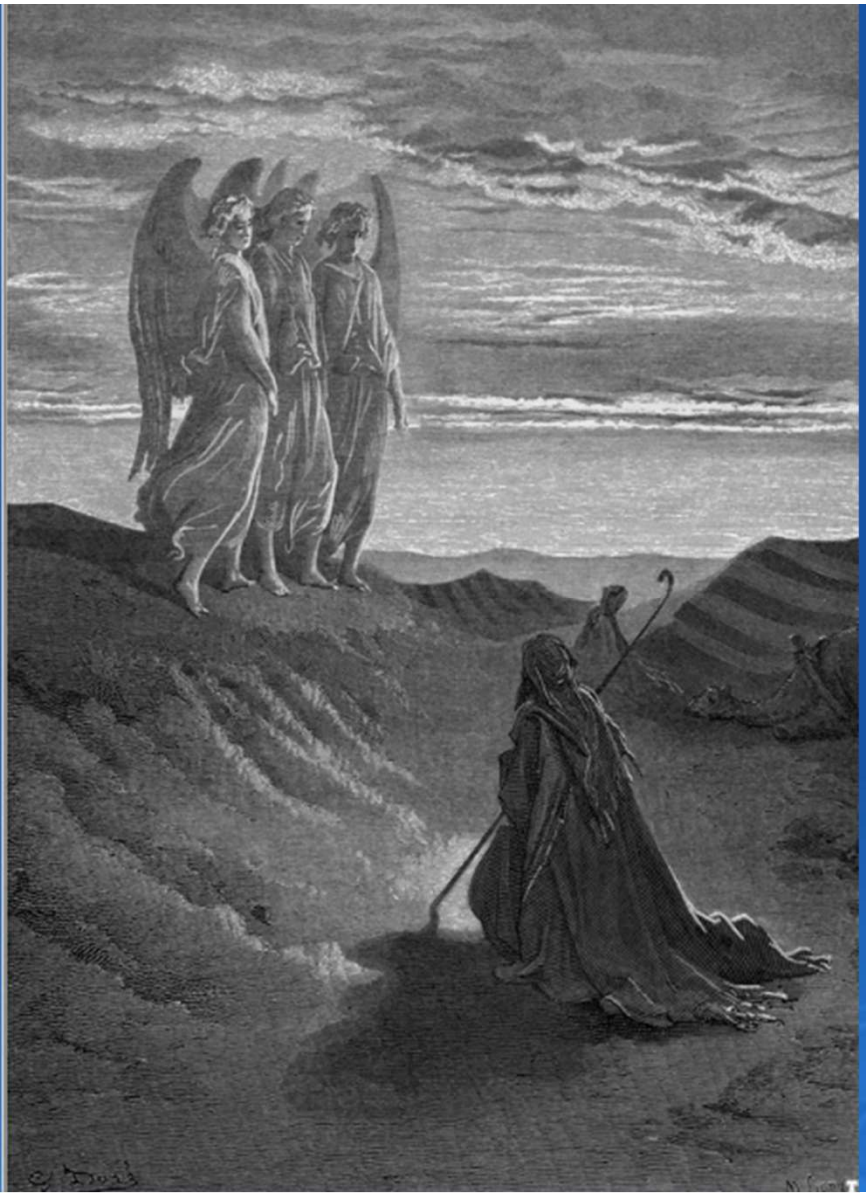

परमेश्वर के मन की एक दुर्लभ झलक

- यहोवा अब्राहम को सदोम के विषय में अपनी योजनाओं से अवगत कराता है।
- **महत्वपूर्ण सिद्धान्त:**
  १) वह अपने न्याय के कारणों को छिपाता नहीं है।
  २) वह अपने आशीष देने के कारणों को छिपाता नहीं है।
  ३) परमेश्वर इब्री लोगों के द्वारा ही अपना रहस्य प्रकट करेगा!

मध्यपूर्वी मोलभाव का सत्र

- अब्राहम केवल अपने ही विषय में नहीं, अपितु दूसरों के विषय में भी चिन्ता करता है।
- हम यहाँ परमेश्वर की न्याय और धर्मपरायणता की परिभाषा देखते हैं।
- हम परमेश्वर की दया को कार्यरूप में देखते हैं।
- हम देखते हैं कि इस समय तक, व्यवस्था (तोरा) में पश्चाताप की कोई भूमिका नहीं है!
- इस समय दुष्ट दुष्ट ही बना रहता है, और धर्मी धर्मी ही बना रहता है।
- इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव व्यवहार के लिए एक सार्वभौमिक मानक पहले ही विद्यमान था।

सदोम का पाप

- पाप नैतिक स्वरूप का था।
- सदोम के लोगों ने सात नूहीय नियमों में परिभाषित कुछ सीमा को पार कर लिया था।
- सदोम एक नगर था, किन्तु साथ ही पाँच नगरों वाले जिले का भी भाग था।
- **सिद्धान्त: परमेश्वर धर्मियों को दुष्टों के साथ नष्ट नहीं करता।**

उत्पत्ति १९: क्या यही उस प्रश्न का उत्तर है?

- उन तीन "मनुष्यों" में से एक यहोवा था।
- शेष दो "मलाख" (संदेशवाहक) थे।
- स्वर्गदूत।
- हम यह सीखते हैं कि स्वर्गदूत मनुष्य का रूप धारण कर सकते हैं।
- सामान्यतः मनुष्य यह नहीं समझ पाते कि जिन "मनुष्यों" से वे बात कर रहे हैं, वे स्वर्गदूत हैं।
- **कारण:** स्वर्गदूत अपने वास्तविक रूप में अत्यन्त भयानक होते हैं!

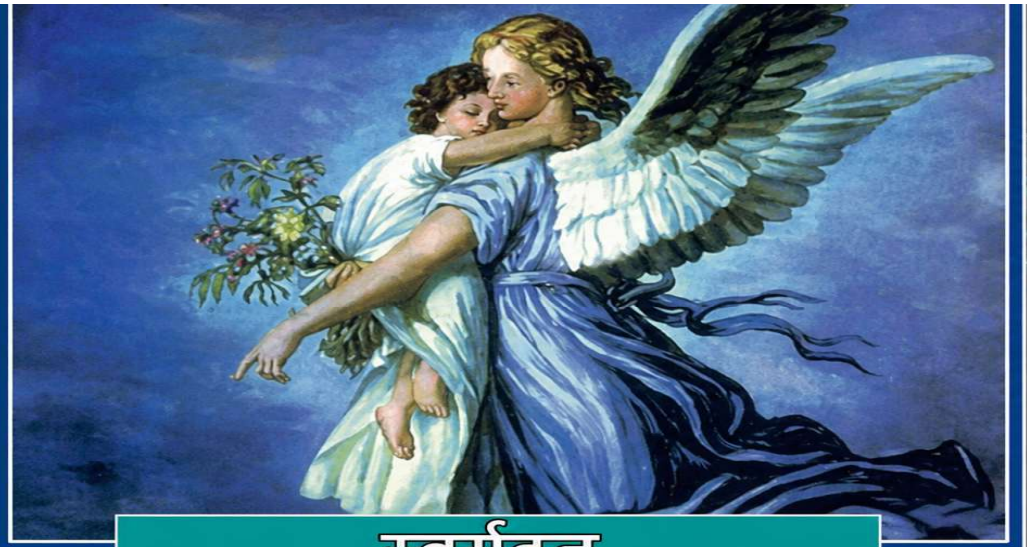

स्वर्गदूत

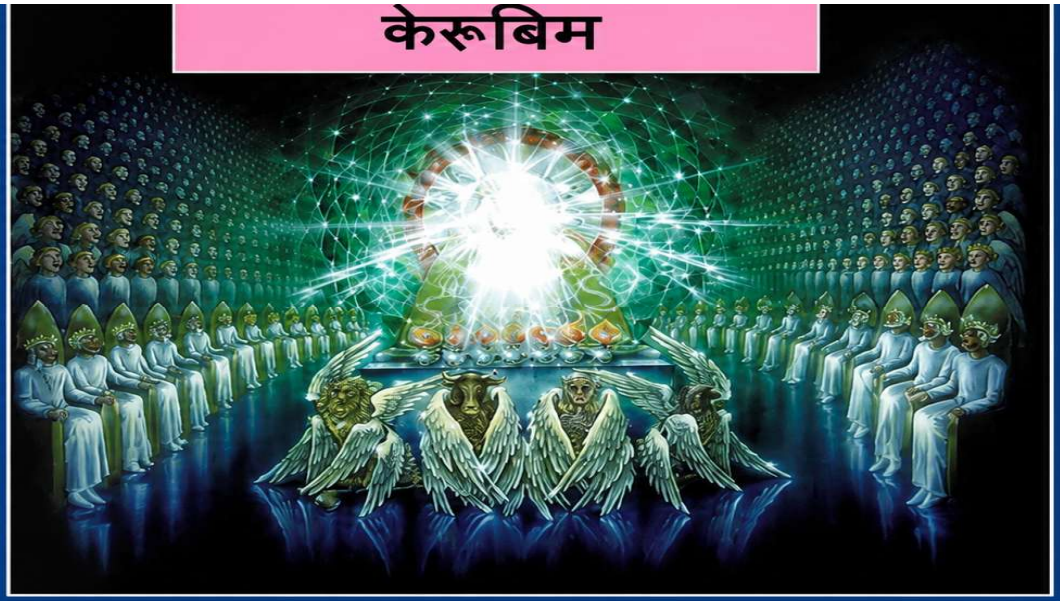

केरूबिम

- स्वर्गदूत आत्मिक प्राणियों का केवल एक ही प्रकार हैं।
- वे "निम्न" स्तर के आत्मिक प्राणी हैं, जिनमें मनुष्यों जितनी स्वतंत्र इच्छा नहीं है।
- उन्हें कार्यों को पूरा करने और संदेश पहुँचाने के लिए सृष्टि की गई थी।
- करूब "ऊपरी" स्तर के आत्मिक प्राणी हैं, जो परमेश्वर के सिंहासन के रक्षक हैं।

- करूब स्वर्गदूत नहीं हैं!

यहोवा मानव रूप धारण करता है

- स्वर्गदूतों के रूप वास्तविक मनुष्य नहीं थे।
- न तो यहोवा ने और न ही स्वर्गदूतों ने किसी पहले से जीवित मनुष्य के शरीर पर कब्जा किया था।
- यहोवा मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, किन्तु वह मांस और रक्त वाला दृश्य रूप प्रतीत होता था।

येशुआ एक स्त्री से जन्मा था,
और बड़ा होकर एक पुरुष बना
वहाँ केवल एक ही येशुआ हुआ है!

याह-शुआ = परमेश्वर उद्धार करता है

- 3 व्यक्तियों की अवधारणा
- छोटी नौकाओं के साथ "माता-जहाज़" ("नियंत्रक जहाज़") बनाता है मानसिक छवि
- विचार यह है कि माता-जहाज़ (या नियंत्रक जहाज़) दूरी से छोटी नौकाओं को नियंत्रित करता है
- छोटी नौकाएँ माता-जहाज़ की शक्ति और अधिकार को प्रक्षेपित करती हैं
- यह विज्ञान-कथा के लिए ठीक है, परन्तु परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप की सच्ची समझ के लिए नहीं

आर.एस.वी. – यूहन्ना १४:९

“यीशु ने उससे कहा, ‘... जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा

- हम चार आयामों में सोचते हैं।
- परमेश्वर टुकड़ों में नहीं है।
- परमेश्वर भागों का योग नहीं है।
- यह “संरचना” शास्त्रानुसार नहीं है।
- परमेश्वर **एक** है .... **एखाद** ।

परमेश्वर के नाम को सुरक्षित रखने का महत्व

- पुराने नियम (ओ.टी.) में परमेश्वर का नाम छह हज़ार (६०००) से भी अधिक बार लिखा गया है।
- याहवेह, यहोवेह, याह... अथवा जेहोवा?
- परमेश्वर के नाम के स्थान पर "परमेश्वर" अथवा "प्रभु" शब्द का प्रयोग किया गया है।
- पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के लिए प्रयुक्त सबसे प्राचीन नाम "एल शद्दाई" है।
- यदि याहवेह को "प्रभु" कहा जाता है, और यीशु को भी "प्रभु" कहा जाता है, तो हम कैसे पहचानें कि किसके विषय में कहा जा रहा है?
- पुराने नियम (ओ.टी.) में जब हम "प्रभु" पढ़ते हैं, तो निन्यानवे प्रतिशत (९९%) अवसरों पर मूल इब्रानी पाठ में वास्तव में "य-ह-व-ह" लिखा होता है।